माणिक दर्शन

हमारा विद्यालय, मॉडर्न गुरुकुल विद्यालय है। गुरुकुल विद्यालय में सायं वंदना को विशेष महत्त्व होता है। यह न केवल न विद्यार्थियों की मानसिक और एकाग्रता शक्ति को बढ़ाती है, ऐसा नहीं बल्कि उनमें नैतिक मूल्य को भी बढ़ता हैं।

हमारे स्कूल में इस स्थान को '*माणिक दर्शन*' इस नाम से जाना जाता है। यहाँ हम सब प्रति दिन शाम छः बजे श्वेत वस्त्र पहने अत्यंत अनुशासन में बैठकर अपने-अपने आराध्य देवता का स्मरण करते हुए अनंत लोक में विचरण करते हैं। यहाँ पंद्रह मिनट एकाग्र चित्त बैठने से इतना आनंद प्राप्त होता है कि जितना एखाद पिंजरे में कैद पंछी को आज़ाद के बाद प्राप्त होता है। पढ़ाई और एकाग्र चित्त का बहुत ही गहरा रिश्ता है। केवल पंद्रह मिनट की एकाग्रता से पढ़ाई में मन लग जाता है। जो भी हम प्रेप में पढ़ते हैं, वह जल्दी समझ में आता है तथा याद भी आसानी से हो जाता है। ध्यान साधना से विद्यार्थी तनाव और चिंता मुक्त हो जाता है। इससे विद्यार्थी क्रोध, तिरस्कार, गाली-गलौज जैसी बुरी भावनाओं को मन में आने से रोकता है। इसलिए हमारे स्कूल का वातावरण अत्यंत सादगी तथा संस्कार पूर्ण है।

अंत में मैं कहना चाहती हूँ कि निवासी विद्यालय में सायं वंदना एक ऐसी परंपरा है जो विद्यार्थियों को अनुशासन, आध्यात्मिकता तथा आत्मिक शांति के मार्ग पर अग्रसर करती है। इससे न केवल उनका वर्तमान बल्कि उनका भविष्य भी उज्ज्वल बनता है।

जय गुरु माणिक !!

कुमारी पल्लवी (कक्षा-8)

मुक्ताबाई सदन

खेल कूद और पढ़ाई

समय की कीमत को पहचान लो,

यह एक नदी है, इसे मत बह जाने दो।

इसे आज बहा, तो कल पछताएगा,

हर पल की कद्र करो, और

जिंदगी सतरंगों से भरो।

बचपन की मस्ती का अपना मज़ा है,

खेलों-कूदों-दौड़ों खूब।

पर याद रखो, पढ़ाई भी जरूरी है,

जीवन का हर पल जरूरी है।

मज़े करो, पर सोच-समझ कर,

खुशियाँ बिखेरो, हर कदम पर।

पर किताबों से भी दोस्ती रखना,

ज्ञान का दीप सदा जलाए रखना।

समय को जानो, यही तो खजाना है,

पढ़ाई और मस्ती को समझना है।

दोनों का संतुलन जो बिठाएगा,

वही जीवन का हर सपना पाएगा।

सदाशिव दीक्षित (कक्षा - 8 वीं 'ब')

सिद्धराज सदन

वृद्धाश्रम

इंसानों ने एक कला बनाई

मां-बाप के बोझ से बचने की

एक अलग दुनिया बनाई।

बेटे ने समझा,

बुढ़ापा एक बोझ है,

और वृद्धाश्रम उसकी खोज है।

माँ बैठी रही, आस की डोरी पकड़े,

हर आहट पर बेटे के कदमों को तकती।

दिखाई न देने पर दिल का दर्द न सह पाती।

जिसने जीवन दिया,

उसे ही अकेला कर दिया,

माँ की ममता को बेटे ने कैसे भुला दिया।

जिनके पास माँ नहीं,

उनसे पूछो तो सही,

माँ का प्यार क्या होता है?

उसकी कमी क्या होती है?

उस अनाथ को जा पूछ

इसलिए पगले थोड़ा सोच...

माँ को वृद्धाश्रम में मत भेजो

क्योंकि माँ के दिल में तो बस तुम ही तुम हो।

चलो, इस साल सभी प्रण करें,

हर माँ-बाप का घर में सम्मान करें,

क्योंकि माँ के प्यार का कोई मोल नहीं,

इनसे बढ़कर जीवन में और कुछ नहीं।

कुमारी श्वेता बिरादर कक्षा 10वीं 'अ'

हिंदी विभाग सचिवा

मातोश्री लक्ष्मीबाई सदन

वक्त

वक्त एक घड़ी की सुई है,

जो बदलते रहता है।

वक्त एक रूम की तरह है,

जो हाथ से फिसलता रहता है।

वक्त एक कोहिनूर हीरा है,

जो बहुत कीमती है।

जिसने वक्त को जाना है,

वक्त ने उसको माना है।

वक्त गिराता भी है,

वक्त उठाता भी है।

इसलिए तुम करो वक्त की कद्र,

तभी वक्त करेगा तुम्हारी कद्र।

वक्त, वक्त होता है,

क्या अच्छा और क्या बुरा?

वक्त से हारना नहीं,

बल्कि वक्त को हारना है।

आयशा (कक्षा-10वीं)

लक्ष्मीबाई सदन

शेर शायरियां

1)जरूरी नहीं रौशनी चिरागों से हो,

शिक्षा से भी घर रौशन होते हैं।

2) हर किसी को अपने ज्ञान का अभिमान तो होता हैं,

असली ज्ञान वही है जिसे अपने अभिमान का ज्ञान होता है...

3)ऐसी कोई करें पढ़ाई, जिससे कोई ना जी चुराए।

नई-नई हों बातें उसमें, सारी बातें मन को भाएँ।

4) बोझ हमें क्यों लगे पढ़ाई, मन कभी भी टिक ना पाए।

कितना कुछ भी याद करें हम, फुर्र से गायब हो जाए।

5)दे कोई ऐसा ज्ञान हमें भी मन की गाँठें खुलती जाएँ।

जिज्ञासा हो शान्त सभी की, भीतर का तम मिटता जाए।

6)मिलकर ऐसी करें पढ़ाई, सबका मन ललचाता जाए।

फिर कुछ करेंगे जग की खातिर सबका घर रोशन हो जाए।।

कुमारी अर्पिता (कक्षा-10वीं)

लक्ष्मीबाई सदन

पहेलियां

1)रात में रोशनी करता हूं,

दिन में सोया करता हूं,

सैर दुनिया की करता हूं,

धरती पर पैर नहीं रखता हूं । बताओ कौन?

2)तीन अक्षर का उसका नाम,

जो आए खाने के काम,

अंत से काटू तो हल बन जाए,

मध्य से काटू तो हवा बन जाए। बताओ क्या?

3)रोज सुबह मैं आता हूं ,

सारी दुनिया की खबर लाता हूं ,

सब करें मेरा इंतजार क्योंकि सब करें मुझसे प्यार।

4)तीन अक्षर का मेरा नाम

उल्टा-सीधा रहे एक समान। बताओ क्या?

कुमार प्रज्वल पटकुरे (कक्षा-7)

सद्गुरु शंकर सदन

सीख

सूरज से नियमितता सीखो

बिन भूले नित आना।

चंदा से सीखो अंधियारे

में उजियाला देना।

पर्वत से सीखो,

अविचल स्थिर सीना ताने रहना।

नदियों से सीखो, बिन रुकते

बिन थकते नित बहना।

धरती से सीखो, ऋतुओं को

हँसते-हँसते सहना।

अंबर से सीखो, विशाल बनकर

भी कुछ ना कहना।

पेड़ों से सीखो, विन पूछे

सब पर छाया धरना।

फूलों से सीखो, खिल-खिलाकर

परिसर सुंदर करना।

पंछी से सीखो अंबर की

ऊँचाई तक उड़ना।

मछली से सीखो, पानी से

अंतिम क्षण तक जुड़ना।

सृष्टि पढ़ाती नए पाठ

तुम सीख उसीसे लेना।

स्वार्थ छोड़ परहित करने को

अपना जीवन देना।।

कहानी मेवाड़ की

आज मैं जिस कहानी का उल्लेख करने जा रही हूं। वह कोई काल्पनिक कथा नहीं सत्य घटना पर आधारित है। इस कहानी को सुनकर आप इस सत्य को मान ही जाएंगे की हर अन्याय का अंत निश्चित है। जो जैसा करता है ईश्वर भी उसे वैसा ही दंड देता है। तो चलिए सुनते हैं कहानी मेवाड़ की। मेवाड़ के राजा सूर्यवंशी थे। जो भगवान राम के वंशज माने जाते हैं। उन्हीं के वंशज, भगवान एक लिंग के परम भक्त राणा कुंभकरण या महाराणा कुंभा की यह कहानी है। राणा कुंभा सबसे यशस्वी और धैर्यवान नरेश रहे। महाराणा कुंभा की छत्रछाया में मेवाड ने सांस्कृतिक बुलंदियों को हुआ। कुंभा का यशोगान जितना करें कम है। उन्होंने अपने 30 साल के शासनकाल में, जितने युद्ध किया उनमें से एक भी युद्ध में नहीं हारे। एक कुशल शासक होने के साथ-साथ वे एक महान योद्धा भी थे। उनकी कद-काठी के बारे में बात करें। तो उनका शरीर बहुत ही बलिष्ठ था। कद से करीब 8 फीट लंबे और अजानबाहु थे ।

उनके शासन काल की बात करें तो राणा के स्थापत्य का को स्वर्ण युग कहा जाता है। अपने शासनकाल में राणा कुंभा ने अनेक महत् कार्य किये जैसे सारंगपुर पर विजय हासिल करने के बाद उन्होंने 9 मंजिला विजय स्तंभ बनवाया जिसके मुख्य द्वार पर विष्णु की मूर्ति विराजमान है जिसके लिए इसे विष्णु ध्वज भी कहा जाता है। उनकी सृजनात्मकता की बात करें तो एक विख्यात वीणा वादक रहे। कुंभा का विवाह कुंभला देवी जी के साथ हुआ। उनके दो पुत्र हुए उदय और रायमल। उदय को ऊदा के नाम से भी जाना जाता है। राणा अपने दोनों पुत्रों से बहुत प्रेम करते थे। समय बीतने के साथ-साथ राणा कुंभा एक विचित्र अपशकुन को लेकर परेशान थे। राणा कुंभा एक उनके पुत्र रायमल ने उन्हें बहुत समझाने की कोशिश की। पर उनका डर वही का वही रहा। जहां एक तरफ छोटा बेटा पिता की चिंता कर रहा था। वही बड़ा बेटा ऊदा पिता की राजगद्दी पर बैठने की सुनहरे सपने देख रहा था। कहा जाता है कि समय चलते-चलते धीरे-धीरे राणा कुंभा मानसिक रोग से ग्रस्त हो गए। राणा कुंभा के आसपास ही कोई उनकी हत्या की साजिश रच रहा था। सब सोच रहे थे कि राणा के दुश्मन ही उसका अंत कर देंगे, पर जो हुआ उसे सुनकर आपके रोंगटे खड़े हो जाएंगे। राणा ने अपने डर को भांप लिया और कुछ ज्योतिषियों से अपनी कुंडली पर चर्चा की। ज्योतिषी ने कहा-" महाराज आपको अपनी संतान से ही खतरा है। आपके जेष्ठ पुत्र उदय सिंह और आपके जन्म नक्षत्र के एक होने के कारण भविष्य में वह आपकी हत्या कर सकता है। इस भविष्यवाणी को सुनकर राणा क्रोधित हुए और ज्योतिषी को बाहर निकाल दिया। राणा कुंभा अपने बड़े बेटे उदय सिंह को मेवाड़ के एक सशक्त उत्तराधिकारी के रूप मैं देखते थे। इसलिए उन्होंने उदय सिंह पर भरोसा किया। उदय सिंह भी मेवाड़ के राज सिंहासन पर बैठने के लिए आतुर था। इसी लालसा में अधीर होते हुए, उदा अपने चाचा खेता के पास गया और उसे पूछने लगा। "चाचा मुझे मेवाड़ की नरम मखमली राजगद्दी पर बैठने की बोहोत इच्छा हो रही है। पर पिता के जीते जी मैं उसे कैसे हासिल करूं?"

तब खेता ने कहा। "बेटा यदि इतने ही बेसब्र हो तो अपने पिता को हमेशा के लिए सुला दो।"

चाचा की बातों को सुनकर ऊदा का मन शांत हुआ और मेवाड़ का वह काला दिन आ ही गया जिस दिन राणा सुबह-सुबह एकलिंग के मंदिर भगवान शंकर के दर्शन हित गए और ईश्वर की पूजा में मग्न हुए। मौका साधकर ऊदा मंदिर आ पहुंचा, और उसने तलवार से अपने पिता का मस्तक उड़ा दिया। राणा कुंभा के रक्त से भगवान शंकर का अभिषेक हुआ। इस भयंकर कृत्य के साक्षी स्वयं एकलिंग बने। उदा की इस हरकत से मेवाड़ की जनता नाराज और दुखी हुई और हर कोई उससे ईर्ष्या करने लगा। उदय ने अपने पिता की हत्या कर मेवाड़ की राजगद्दी रिक्त कर दी जिस सिंहासन के प्रति राणा कुंभा के मन में अतीव श्रद्धा और भक्ति थी जिसको वे एकलिंग का आसन मानते थे उसी सिंहासन का वर्णन यदि कवि श्यामनारायन पाण्डेय के शब्दों में करे तोः

यह एकलिंग का आसन है

इस पर न किसी का शासन है

नित सिहक रहा कमलासन है

यह सिंहासन सिंहासन है

यह सम्मानित अधिराजों से

अर्चित है, राज-समाजों से

इसके पद-रज पोंछे जाते

भूपों के सिर के ताजों से

इसकी रक्षा के लिए हुई

कुर्बानी पर कुर्बानी है

हे महादेव रक्षा करना

यह सिंहासन अभिमानी है

मेवाड़ में ऊदा पितृहंता के नाम से जाना जाने लगा। पिता की हत्या के बाद उदय सिंह मेवाड़ की राजगद्दी पर बैठकर ऐश करने लगा। वह अच्छा शासक नहीं बन पाया। उदय सिंह साम्राज्य संभाल न सका। रायमल को जब पता लगा कि उसके बड़े भाई ने पिता की हत्या की। है तो वह सेना लेकर उदय सिंह पर हमला करने आया। उदय सिंह डरकर मुगल सुल्तान गयाजशाह के पास गया। शाह से बोला सुल्तानsss मुझे मेवाड़ वापस दिला दो। सुल्तान ने शर्त रखी "यदि तुम अपनी पुत्री का विवाह मुझसे करवाओगे तो मैं तुम्हारी मदद जरूर करूंगा।" उदय सिंह ने सुल्तान के साथ समझौता किया और मांडू से निकल पड़ा। बरसात का मौसम था। बहुत जोरों से बारिश हो रही थी और बिजली भी कड़क रही थी। रास्ते में जोर से बिजली कड़की और उदय सिंह पर आ गिरी। अंततः भगवान शंकर ने अपनी तीसरी आँख खोल ही दी। उनका क्रोध बिजली के रूप मे उदय सिंह पर आगिरा। जिसके कारण उसकी मृत्यु हुई।जिसके हाथ अपने पिता के खून से रंगे हुए थे उसकी बली मेवाड़ की धरती और आसमान दोनों मांग रहे थे। आखिर ईश्वर ने उसे दंड दे ही दिया। आशा है आपको यह कहानी पसंद आई होगी।

सौ. अरुंधती भागवत

उप-प्रधानाचार्या (अकैडमिक)